المملكة العربية السعودية

290

وزارة الشؤون الإسلامية والدعوة والإرشاد

मंत्रिमंडल इस्लामिक विषय, औक़ाफ़ एवं आमन्त्रण व निर्देश का प्रकाशन

हज्ज उमरा

व ज़ियारते-मस्जिद-नबवी सम्बन्धी मार्गदर्शिका

लेख

हज्ज सम्बन्धी इस्लामी आयोग

इस्लामी अनुसंधान एवं इफ़्ता की स्थायी परिषद और शैख़ मुहम्मद बिन सालेह उसैमीन रहिमहुल्लाह द्वारा स्वीकृति प्राप्त

अनुवादक

अहमद सईद सिद्दीक़ी

وكالة المطبوعات والبحث العلمي

uspr@moia.gov.sa

मंत्रिमंडल इस्लामिक विषय, औक़ाफ़ एवं आमन्त्रण व निर्देश का प्रकाशन

हज्ज उमरा

व ज़ियारते-मस्जिद-नबवी सम्बन्धी मार्गदर्शिका

लेख

हज्ज सम्बन्धी इस्लामी आयोग

इस्लामी अनुसंधान एवं इफ़्ता की स्थायी परिषद और शैख़ मुहम्मद बिन सालेह उसैमीन रहिमहुल्लाह द्वारा स्वीकृति प्राप्त

अनुवादक

अहमद सईद सिद्दीक़ी

मंत्रिमंडल के मुद्रण एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान विभाग के निरीक्षण अधीन मुद्रित

1439 हि॰

ح وزارة الشؤون الإسلامية والدعوة والإرشاد ١٤٣٥ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

السعودية. وزارة الشؤون الإسلامية والدعوة والإرشاد.
هيئة التوعية الإسلامية في الحج
دليل الحاج والمعتمر. - الرياض.
٦٤ ص ؛ ١٣ سم
ردمك : ٦-٣٦٩-٢٩-٩٩٦٠
(النص باللغة الهندية)
١- الحج ٢- العمرة أ- العنوان
ديوي ٢٥٢,٥ ٢٢/٣١١٤

رقم الإيداع : ٢٢/٣١١٤
ردمك : ٦-٣٦٩-٢٩-٩٩٦٠

الطبعة الرابعة والعشرون

1439 هـ - 2018 م

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
विषय सूची.................................	3
प्रस्तावना.................................	5
महत्वपूर्ण निर्देशें....................	8
इस्लाम से बहिष्कार करने वाली बातें...............................	15
हज्ज व उमरा की अदायगी और मस्जिद नबवी कि ज़ियारत कैसे करें ?............	26
उमरा का तरीक़ा....................	29
हज्ज का वर्णन......................	36
मोहरिम के लिए आवश्यक बातें..	43

मस्जिद नबवी ﷺ की ज़ियारत का तरीक़ा............... 47
हाजियों से प्रायः होने वाली ग़लतियाँ.. 52
हज्ज व उमरा करने वाले के लिए संछिप्त निर्देश......... 68
अरफात और मश्अरे हराम आदि स्थानों के लिए कुछ दुआयें.. 82

प्रस्तावना

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده نبينا محمد بن عبد الله وعلى آله وصحبه، أما بعد:

सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए हैं जो अकेला है। और दरूद व सलाम हमारे नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर हो जिनके पश्चात कोई नबी नहीं और आपके परिवार एवं साथियों पर भी हो। अम्मा बादः

हज्ज सम्बन्धी इस्लामी आयोग, अल्लाह के पवित्र घर का हज्ज करने वालों के लिए यह संछिप्त निर्देशिका प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता अनुभव करता है। इसमें हज्ज व उमरा के बहुत से उपलब्ध निर्देश दिये गए हैं। प्रारम्भ

हम कुछ महत्वपूर्ण उपदेशों से कर रहे हैं जिनके द्वारा हम सर्वप्रथम अपने आप को वसीयत करते हैं, फिर आप को वसीयत करते हैं। इस समय हमारे सामने, अल्लाह तआला का उसके मुक्ति पाने वाले तथा लोक और प्रलोक में सफलता प्राप्त करने वाले बन्दों के गुणों के वर्णन में यह कथन है:

﴿ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴾[العصر: ٣]

तथा (जिन्होंने) आपस में सत्य की वसीयत की और एक–दूसरे को धैर्य रखने का उपदेश दिया। (सूरतुल अस्र: 3)

तथा यह कथन भी है :

﴿ وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَى وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ﴾ [المائدة:٢].

अच्छाईयों और अल्लाह के प्रति डर (सयंम) के कामों में एक–दूसरे की सहायता करो और

बुराईयों (पाप) और अत्याचार के कामों में एक–दूसरे की सहायता न करो।

(सूरतुल मायदाः 2)

हम हाजियों से आशा करते हैं कि वह अपना हज्ज आरम्भ करने से पहले इस पुस्तिका को अवश्य पढ़ें ताकि इस फर्ज़ को भली–भांति पूरा कर सकें। इस किताब में–यदि अल्लाह ने चाहा तो–बहुत से प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगे।

हमारी दुआ है कि अल्लाह हम सबके हज्ज को हज्ज मबरूर बनाए और हमारी कोशिश का अच्छा बदला दे (गुणग्रहण करे) और हमारे सत्कर्म को स्वीकार करे।

वस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

महत्वपूर्ण निर्देशें

हाजी भाईयो ! अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने आप को हज्ज बैतुल्लाह का अवसर प्रदान किया (तौफीक़ दी)। हम दुआ करते हैं कि अल्लाह हमारी और आपकी अच्छाईयों को स्वीकार करे और इसका बदला व सवाब अधिक से अधिक दे।

हम यह उपदेश प्रस्तुत करते हुए आशा करते हैं कि अल्लाह हम सब के हज्ज को स्वीकार करे और हमारी कोशिश (प्रयत्न) का गुणग्रहण करे (उत्तम बदला दे)।

नम्बर 1:

यह बात ध्यान में रखना चाहिए कि आप एक पवित्र यात्रा पर निकले हैं, जिसकी नीव अल्लाह की तौहीद, उसके लिए इख्लास, अल्लाह के बुलावे पर अनुक्रिया तथा आज्ञाकारिता, अल्लाह के पुण्य की आशा और

उसके रसूल मुहम्मद ﷺ की आज्ञापालन पर है। इसलिए 'हज्ज मबरूर' का बदला केवल स्वर्ग है।

नम्बर 2:

इस बात का ध्यान रहे कि शैतान आपके बीच शंका पैदा न करे क्योंकि वह तो घात में बैठा हुआ दुश्मन है। अतः अल्लाह के लिए एक–दूसरे से प्रेम करें तथा लड़ाई झगड़े और अल्लाह की आज्ञा के उल्लंघन से बचते रहें। और ज्ञात रहे कि रसूलुल्लाह ﷺ का कथन है: " तुम में से कोई व्यकित उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए वही पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है"।

नम्बर 3 :

अगर दीन के मामले और हज्ज सम्बन्धी कोई समस्या हो तो तुरन्त उलमा से प्रश्न करें

ताकि समझदारी और ज्ञान प्राप्त हो, कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لا تَعْلَمُونَ ﴾

[النحل:٤٣].

अगर तुम नहीं जानते हो तो विद्वानों (ज्ञानी) से पूछ लिया करो। (सूरतुन नहल: 43)

और नबी ﷺ का कथन है:

'' जिसके लिए अल्लाह तआला भलाई चाहता है उसे दीन की समझ प्रदान कर देता है''।

नम्बर 4 :

यह बात ध्यान में रहे कि अल्लाह तआला ने कुछ कामों को हमारे लिए फर्ज़ (अनिवार्य) बताया है और कुछ को मसनून व मुस्तहब (ऐच्छिक) बताया है और जो व्यक्ति फराईज़ की पाबन्दी नहीं करता उसके मसनून कर्म स्वीकार नहीं होते। कुछ हाजी इस सत्य को भूल जाते हैं और हज्रे अस्वद को चुम्बन देने,

या तवाफ में रमल करने, या मुक़ामे इब्राहीम के पीछे नमाज़ पढ़ने, या ज़मज़म का पानी पीने के लिए मुसलमान स्त्रियों और पुरूषों को धक्का देकर कष्ट देते हैं, हालांकि ये सारे काम मसनून हैं और मोमिन को कष्ट पहुँचाना हराम है। फिर हम एक सुन्नत की अदायगी के लिए हराम काम क्यों करते हैं ? अल्लाह आप पर दया करे एक–दूसरे को कष्ट पहुँचाने से बचें, अल्लाह तआला आप को सवाब और उत्तम प्रतिफल (अज्र) से नवाज़ेगा।

मसले के स्पष्टीकरण के लिए निम्न बातें उल्लेखनीय हैं :

(क) मुसलमानों के लिए यह उचित नहीं कि मस्जिद हराम में या किसी और जगह स्त्री के समीप या उसके पीछे नमाज़ अदा करें। यदि इससे बचने की शक्ति रखता है तो ऐसा

करना किसी भी कारण से उचित नहीं। और स्त्रियों के लिए अनिवार्य (वाजिब) है कि वह पुरूषों के पीछे नमाज़ पढ़ें।

(ख) हरम शरीफ के दरवाज़े और रास्ते में नमाज़ पढ़ना उचित नहीं, इसलिए कि उससे गुज़रने वालों को कष्ट होता है।

(ग) काबा के चारों ओर बैठने और उसके समीप नमाज़ अदा करने या हज्रे अस्वद और मुक़ामे इब्राहीम के पास रूकने के कारण भीड़ के समय लोगों को तवाफ करने में बाधा होती है, अतः ऐसा करना सहीह नहीं है क्योंकि इसमें हानि और कष्ट है।

(घ) हज्रे अस्वद को चुम्बन देना सुन्नत है और मुसलमान को सम्मान देना फर्ज़। सुन्नत के लिए फर्ज़ की बलि देना किसी तरह सहीह नहीं। भीड़ के समय हज्रे असवद की ओर संकेत करना तथा तकबीर (अल्लाहु

अकबर) कहते हुए आगे बढ़ जाना ही प्र्याप्त होगा। तथा तवाफ के स्थान से धीमे से निकलना चाहिए।

(ङ) रूक्ने यमानी (काबा के यमन के ओर का कोना) के सामने से गुज़रते हुए दायें हाथ से उसे छूना और 'बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अक्बर' कहना सुन्नत है, उसका चुम्बन करना वैध नहीं। यदि तवाफ करने वाला उसे न छू सके तो तवाफ में आगे बढ़ जाये और उसकी ओर संकेत न करे और न उसके सामने से गुज़रते हूए तकबीर कहे। इसलिए कि यह नबी ﷺ से सिद्ध नहीं है। और उसके लिए उचित है कि यमनी कोना और हज्रे अस्वद के मध्य निम्नलिखित दुआ पढ़े:

﴿رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾ [البقرة: ٢٠١].

ऐ हमारे रब ! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर और प्रलोक में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक के अज़ाब से बचा।

(सूरतुल बक़रः 201)

अन्त में हम सभी हज्ज यात्रियों को अल्लाह की किताब व रसूल ﷺ की सुन्नत के पालन का उपदेश देते हैं। अल्लाह का आदेश हैः

﴿وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾

[آل عمران:١٣٢].

और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो ताकि तुम उसके रहमत के पात्र बन सको। (आले इम्रानः 132)

इस्लाम से बष्किार करने वाली बातें

मुस्लिम भाईयो ! दस ऐसी बातें हैं जिनमें से प्रत्येक मनुष्य को इस्लाम से बहिष्कृत कर देती हैं, जो बहुधा लोगों से हो जाती हैं, अतः उन से सावधान रहें और वह यह हैं :

पहली बात :

अल्लाह की इबादत में अल्लाह के सिवा दूसरों को सम्मिलित करना। अल्लाह तआला का कथन है :

﴿ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴾

[المائدة:٧٢].

जिसने अल्लाह की इबादत में किसी वस्तु को सम्मिलित किया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग हराम कर दिया और नरक उसका ठिकाना है

और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा। (सूरतुल मायदाः 72)
मृतको को पुकारना उनसे सहायता मांगना और उनके लिए नज़र व नियाज़ करना और जानवर ज़बह करना शिर्क के अन्तरगत है।

दूसरी बात :

जिसने अल्लाह और अपने बीच किसी को माध्यम बनाया जिसे वह पुकारता, उससे सिफारिश की प्रार्थना करता और उस पर भरोसा करता है तो वह सर्वसहमति के साथ कााफ़िर (नास्तिक) है।

तीसरी बात :

जिसने मुशरिकों (अल्लाह के साथ दूसरों को सम्मिलित करने वालों) को नास्तिक नहीं समझा या उनके कुफ़्र में सन्देह किया या उनके धर्म को सत्य समझा वह काफ़िर (नास्तिक) है।

चौथी बात :

जिसका यह विश्वास (अक़ीदा) हो कि कोई दूसरी राह नबी ﷺ की राह से अधिक परिपूर्ण और श्रेष्ठ है या यह कि किसी और का फैसला आप ﷺ के फैसले से उच्चतर है, जैसे वे जो शैतानी शक्तियों के नियमों को आप ﷺ के नियमों से अधिक उचित समझते हैं, तो ऐसे लोग काफ़िर हैं। उन्हीं में से निम्नलिखित बाते हैं :

(क) यह विश्वास रखना कि मानवजाति के बनाये हुए नियम और विधियाँ इस्लामी शरीयत से श्रेष्ठ हैं, या इक्कीसवीं शताब्दी में इस्लामी पद्वति की स्थापना संभव नहीं, या यह कि मुसलमानों के पतन का कारण इस्लाम था, या यह कहना कि इस्लाम केवल बन्दों और प्रभु के सम्बन्ध के साथ विशेष है,

जीवन के अन्य मामलों से उसका कोई संबंध नहीं।

(ख) यह कहना कि हुदूद अर्थात धर्म–दण्ड से संबंधित अल्लाह तआला के आदेश को लागु करना जैसे कि चोर का हाथ काटना या विवाहित व्यभिचारी को पत्थर मार मार कर मृत कर देना वर्तमान युग के अनुकूल नहीं।

(ग) यह आस्था रखना कि शरई मामलों या हुदूद (धर्म दण्ड) या उनके अतिरिक्त मामलों में गैर इस्लामी नियमों के अनुसार फ़ैसला जायज़ है (यद्यपि उसकी यह आस्था न हो कि वे नियम इस्लामी शरीयत के नियम से श्रेष्ठ हैं) क्योंकि इज्मामाये उम्मत (रसूल ﷺ के अनुयायियों की सर्वसम्मत सहमति) के अनुसार जिस वस्तु को अल्लाह ने हराम बताया है, उसे उसने उचित बताया और यह

इज्माये उम्मत का फ़ैसला है कि जो कोई अल्लाह के मुहर्रमात (निषेध वस्तुओं) को हलाल बता देगा, जिसका धर्मांश होना स्वतः सिद्ध हो उदाहरण के तौर पर व्यभिचार, शराब पीना, व्याज व ग़ैर इस्लामी नियमों को लागु करना इत्यादि, वह काफ़िर है।

पाँचवी बात :

जिस किसी ने रसूल ﷺ की लाई हुई बातों में से किसी को घृणित समझा वह काफ़िर हो गया (चाहे वह उस पर अमल ही क्यों न करे) क्योंकि अल्लाह तआला का कथन है :

﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ﴾ [محمد:٩].

यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह के भेजे हुए नियम और शराये (शरीअत) को बुरा समझा

तो अल्लाह ने उनके अच्छे कर्मों को नष्ट कर दिया। (सूरत मुहम्मदः 9)

छठी बात :

जिसने अल्लाह, अथवा उसकी किताब, अथवा उसके रसूल ﷺ अथवा उसके दीन की किसी बात की हंसी उड़ाई वह काफिर हो गया। अल्लाह तआला का फरमान हैः

﴿ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ﴾

[التوبة:٦٥،٦٦].

ऐ नबी ! आप कह दीजिए कि क्या तुम लोग अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल की हंसी उड़ाया करते थे, अब झूठे बहाने न करो, तुम तो ईमान के बाद काफ़िर हो गये। (सूरतुत तौबाः 65–66)

सातवीं बात :

जादू और उसी में से 'सर्फ' भी है अर्थात पति को अपनी पत्नी के प्रेम से फेर कर उसके अन्दर अपनी पत्नी के बारे में घृणा पैदा कर देना, और उसी में से 'अत्फ़' भी है अर्थात शैतानी माध्यम से इंसान के हृदय में ऐसी वस्तु की इच्छा जागृत करना जिसे वास्तव में वह नहीं चाहता। जो व्यक्ति ऐसा करे या ऐसी बातों से सहमत रहे वह कुफ़्र की सीमा में प्रवेश कर जायेगा। अल्लाह तआला का कथन है:

﴿وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ﴾ [البقرة:١٠٢].

वे दोनों किसी को उस समय तक नहीं सिखाते जब तक यह बता नहीं देते कि हम दोनों तो केवल एक परीक्षण हैं इसलिए कुफ़्र का कार्य न करो। (सूरतुल बक़रा: 102)

आठवीं बात :

मुशरिकों का समर्थन और मुसलमानों के विरूद्ध उनकी सहायता करना। अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ﴾ [المائدة: ٥١].

तुम में से जो उनको दोस्त रखेगा वह उन्हीं में से एक हो जाये गा अल्लाह तआला अत्याचार करने वाली क़ौम को निर्देश नहीं देता। (सूरतुल मायदाः 51)

नवीं बात :

जिसका यह विश्वास हो कि कुछ लोगों को शरीअत मुहम्मदिया की सीमा से बाहर रहने का अधिकार है वे काफ़िर हैं, जैसाकि कुरआन करीम में है :

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلامِ دِيناً فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾

[آل عمران:٨٥].

जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी और धर्म को खोजेगा उसका धर्म कदापि स्वीकार नहीं किया जाए गा और आख़िरत में वह घाटे में रहेगा। (सूरत आल इम्रान : 85)

दसवीं बात :

अल्लाह के दीन का परित्याग या किसी ऐसी बात से विमुखता प्रकट करना जिसके बिना आदमी का इस्लाम शुद्ध (सहीह) नहीं हो सकता, इस प्रकार कि वह न तो उसको सीखता है और न उसके अनुसार कार्य करता है, क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ﴾ [السجدة:٢٢].

और उस आदमी से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जिसको अल्लाह तआला की आयतों का स्मरण कराया जाये तो परित्याग करे। हम निस्संकोच पापियों से बदला लेंगे।
(सूरतुस सज्दह :22)
और अल्लाह का यह कथन भी है:

﴿ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنْذِرُوا مُعْرِضُونَ﴾

[الاحقاف:٣].

और जिन लोगों ने कुफ्र को अपनाया वे धमकियों का परित्याग करते है।
(सूरतुल अहक़ाफ :3)

इस्लाम से बहिष्कार करने वाली ये बातें हर दशा में बराबर हैं चाहे वह मज़ाक में, गम्भीर

मुद्रा में या डर की स्थिति में हुई हों, केवल वह व्यक्ति मुक्त है जिसने अत्यन्त मजबूरी में इनमें से किसी एक का अनुसरण किया हो। हम अल्लाह से उसके क्रोध के कारणों और उसकी कष्टदायक सज़ा से पनाह मांगते हैं।

हज्ज, उमरा और मस्जिद नबवी ﷺ की ज़ियारत कैसे करें ?

मुसलमान भाईयो ! हज्ज तीन प्रकार से किया जाता है :

हज्ज अत–तमत्तुअ

हज्ज अल–क़िरान

हज्ज अल–इफ़राद

हज्ज अत–तमत्तुअ :

हज्ज के महीनों में (प्रथम शव्वाल से ज़िल्लहिज्जा की दस तारीख के फज्र उदय होने तक) उमरा का इहराम बांधना, उमरा पूरा करने के बाद प्रतीक्षा करना और फिर उसी वर्ष आठवीं ज़िलहिज्जा को मक्का मुकर्रमा या उसके निकट से हज्ज का इहराम बांधना।

हज्ज अल–क़िरान :

हज्ज के महीने में हज्ज और उमरा दोनों का एक साथ इहराम बांधना। ऐसी हालत में हाजी क़ुर्बानी (दसवीं ज़िलहिज्जा) के दिन हज्ज और उमरा दोनों से हलाल होगा। दूसरा उपाय यह है कि हज्ज के महीनों में पहले तो उमरा की नीयत से इहराम बांधे फिर तवाफ को आरम्भ करने से पहले हज्ज की भी नीयत करे।

हज्ज अल–इफ़्राद :

हज्ज के महीनों में केवल हज्ज की नीयत मीक़ात (इहराम बांधने का निर्धारित स्थान) या अपने घर से यदि मीक़ात के अन्दर हो या मक्का मुकर्रमा से करना यदि वहाँ रह रहे हों। फिर यदि उसके पास क़ुर्बानी का जानवर है तो दसवीं तारीख तक इहराम की अवस्था में बाक़ी रहेगा, और यदि क़ुर्बानी का

जानवर साथ नहीं लाया है तो हज्ज की नीयत को उमरा में बदल देना जायज़ है ताकि तमत्तुअ की नियत से उमरा कर सके, ऐसी स्थिति में तवाफ व सई के उपरान्त बाल कटवाकर हलाल हो जायेगा। इसलिए कि जिन लोगों ने केवल हज्ज की नीयत की थी और अपने साथ क़ुर्बानी का जानवर नहीं लाये थे, उनको अल्लाह के रसूल ﷺ ने ऐसा ही आदेश दिया था। इसी तरह हज्ज अल–क़िरान की नीयत करने वाले के पास यदि क़ुर्बानी का जानवर नहीं है तो उसके लिए भी हज्ज की नीयत को उमरा में बदलना मशरूअ है।

सबसे श्रेष्ठ हज्ज, 'तमत्तुअ' है उनके लिए जो क़ुर्बानी का जानवर न ले गए हों, इसलिए कि नबी ﷺ ने सहाबा को ऐसा ही आदेश दिया था और उस पर बल (ज़ोर) दिया था।

उमरा करने का तरीक़ा

1. मीक़ात पर पहुँचने के पश्चात शरीर की सफाई करना, स्नान करना, शरीर में सुगन्ध लगाना (इहराम के कपड़ों में नहीं) सुन्नत है, और फिर इहराम के कपड़े (लुंगी और चादर) पहन लो, बेहतर यह है कि दोनों कपड़े सफेद हों। स्त्रियाँ किसी भी तरह का कपड़ा पहन सकती हैं मगर शर्त यह है कि बेपर्दगी और श्रृंगार प्रदर्शक तथा पुरूषों के कपड़ों अथवा नास्तिक महिलाओं के कपड़ों की भांति न हों, फिर उमरा की नीयत करो और कहो:

لَبَّيْكَ عُمْرَةً: ((لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ)).

मैं उमरा के लिए हाज़िर हूँ , मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूँ , मैं हाज़िर हूँ तेरा कोई

साझी नहीं मैं हाज़िर हूँ , निःसन्देह सब प्रशंसा और कृपा (नेमत) एवं राज्य तेरे ही लिए है, तेरा कोई साझी नहीं।

पुरूष इसको ऊँचे स्वर में कहेगा और स्त्रियाँ धीमे से, फिर तलबिया, ज़िक्रे इलाही और अल्लाह से अपनी त्रुटियों के लिए क्षमा मांगने मे व्यस्त रहो।

2. मक्का मुकर्रमा पहुँचने के बाद काबा का सात बार तवाफ (चक्कर) करो। आरम्भ हज्रे अस्वद के निकट से तकबीर के माध्यम से होना चाहिए और अन्त भी वहीं होगा। तवाफ करते समय ज़िक्रे इलाही और विभिन्न प्रकार की मशरूअ दुआओं में व्यस्त रहना चाहिए और सुन्नत यह है कि हर चक्कर में यमनी कोना और हज्रे अस्वद के बीच यह दुआ पढ़ेः

﴿ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴾ [البقرة: ٢٠١].

ऐ हमारे रब ! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर और प्रलोक में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक के अज़ाब से बचा।

(सूरतुल बक़रः 201)

फिर यदि सम्भव हो तो मुक़ामे इब्राहीम के पीछे, चाहे उससे दूर ही क्यों न हो, वरना मस्जिद में किसी भी स्थान पर दो रिकअत नमाज़ पढ़ो।

इस तवाफ में पुरूष के लिए सुन्नत है कि अपनी चादर का इज़्तिबाअ करे अर्थात उसके बीच का भाग अपने दायें बग़ल में और उसके दोनों किनारों को अपने बायें कन्धे पर रखे। पुरूष के लिए यह भी सुन्नत है कि तवाफ के प्रथम तीन चक्करों में रमल करे अर्थात छोटे छोटे पग के साथ चले।

3. उसके बाद सफ़ा पहाड़ी की ओर जाओ, उस पर चढ़ो और यह आयत पढ़ो :

﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْراً فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ﴾ [البقرة:١٥٨].

अवश्य सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से है इसलिए अल्लाह के घर का हज्ज तथा उमरा करने वाले पर इनकी परिक्रमा कर लेने में भी कोई पाप नहीं और अपनी प्रसन्नता से पुण्य करने वालों का अल्लाह सम्मान करता है तथा उन्हें भली–भांति जानने वाला है।

(सूरतुल बक़रः 158)

फिर क़िबला (काबा की ओर) की दिशा में मुख करो, अल्लाह की प्रशंसा करो और दोनों हाथ उठाकर, दुआ करने वाले की भांति तीन बार अल्लाहु अकबर कहो और दुआ करो, दुआ को तीन बार दोहराना सुन्नत है और निम्न दुआ भी तीन बार पढ़ो :

(لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ وَحْـدَهُ لاَ شَـرِيْـكَ لَـهُ، لَـهُ الْمُلْـكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٍ).

(لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ وَحْـدَهُ ، أَنْجَـزَ وَعْـدَهُ وَنَصَـرَ عَبْـدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْـدَهُ).

अल्लाह के अतिरिकत कोई भी उपासना के योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी का राज्य है और उसी के लिए प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर सर्वशकितमान है।

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं वह अकेला है, उसने अपना वचन पूरा किया और अपने बन्दे की सहायता की और अकेले अल्लाह ने सारी सेनाओं को शिकस्त दी।

दुआ का कुछ भाग पढ़ने में भी कोई हर्ज नहीं, फिर पहाड़ी से उतर कर उमरा के लिए

सात बार सई करो, हर बार दोनों निशानों के बीच तेज़ चलो और उसके पहले और बाद आदत के अनुसार चलो, फिर मरवा पहाड़ी पर चढ़ो, अल्लाह की प्रशंसा करो और वैसा ही सब करो जैसा कि सफ़ा पहाड़ी पर किया था। तवाफ़ और सई के लिए कोई आवश्यक विशेष दुआ नहीं है बल्कि जो भी ज़िक्र व तस्बीह और दुआ याद हो पढ़ो और क़ुरआन का पाठ करो, लेकिन इस विषय में नबी ﷺ से साबित मसनून अज़कार व दुआओं का विशेष ध्यान रखें।

4. सई पूरे होने के बाद सिर के बाल मुंडवा दो या छोटे करवा दो। अब उमरा पूरा हो गया और इहराम के कारण जो वस्तुयें हराम हो गई थीं वह हलाल हो गईं। यदि हज्जे तमत्तुअ कर रहे हो तो उमरा करने के बाद बाल छोटा कराना उत्तम है ताकि हज्ज से हलाल होने के समय बाल मुंडवा सको।

यदि नीयत हज्ज तमत्तुअ या क़िरान की थी तो क़ुर्बानी के दिन एक बकरी, अथवा ऊँट या गाय के सातवें हिस्से की क़ुर्बानी वाजिब होगी, अगर किसी को यह सब प्राप्त न हो तो दस रोज़े रखने होंगे, तीन रोज़े हज्ज के दौरान और बाक़ी सात रोज़े घर लौटने पर रखने होंगे।

श्रेष्ठ यह है कि अरफा (नौ ज़िलहिज्जा) के दिन से पहले ही तीनों रोज़े रख लिए जायें और यदि ईद (दसवीं जिलहिज्जा) के पश्चात तीन दिनों में रोज़ा रखे तो भी कोई बात नहीं।

हज्ज का वर्णन (बयान)

1. अगर तुम ने हज्जे इफराद या हज्जे क़िरान की नीयत की है तो हज्ज की नीयत उस मीक़ात (इहराम बांधने का स्थान) के पास से करो जहाँ से तुम्हारा गुज़र हो और अगर तुम्हारा स्थान मीक़ात की सीमाओं के अन्तरगत हो तो अपने स्थान से नीयत करो, और अगर नीयत हज्जे तमत्तुअ की की थी तो हज्ज की नीयत उस मीक़ात से करो जहां से तुम्हारा गुज़र हो, और हज्ज की नीयत आठवीं ज़िलहिज्जा को अपने रहने के ही स्थान से करो, हो सके तो स्नान करो और सुगन्ध लगाओ और इहराम के कपड़े पहन लो, फिर कहो :

لبيك حجا ، لبيك اللهم لبيك... الخ

2. फिर मिना के लिए प्रस्थान कर जाओ। और वहाँ ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा और फज्र की नमाज़ पढ़ो, चार रिकअत वाली नमाज़े क़स्र करके उनके समय पर बिना जमा किये हुए पढ़ो।

3. नौ तारीख को सूरज निकलने के बाद शान्ति पूर्वक अरफात के लिए प्रस्थान करो, अपने हाजी भाईयों को कष्ट न पहुँचाओ, वहाँ ज़ुहर और अस्र की नमाज़ जमा तक़्दीम (अर्थात ज़ुहर के समय) और क़स्र करके (अर्थात दो दो रिकअत) एक अज़ान और दो इक़ामत के साथ पढ़ो, अरफात की सीमा में प्रवेश करने का विश्वास कर लो और नबी ﷺ की अनुसरण में क़िबला की ओर मुख करके दोनों हाथों को उठाकर अधिकाधिक अल्लाह की प्रशंसा और दुआ में व्यस्त रहो, अरफात का पूरा मैदान ठहरने का स्थान है, सूरज डूबने तक अरफात ही में ठहरे रहो।

4. सूरज डूबने के बाद लब्बैक लब्बैक पुकारते हुए पूरी शान्ति और धैर्य के साथ मुज़दलिफा की ओर प्रस्थान कर जाओ, और अपने मुसलमान भाईयों को कष्ट न पहुँचाओ। मुज़दलिफा पहुँचते ही मग़रिब और इशा की नमाज़ जमा व क़स्र के साथ अदा करो, उसके बाद वहाँ उस समय तक रहो कि फज्र की नमाज़ पढ़ लो और प्रभात की किरन फैल जाए। फज्र की नमाज़ के बाद नबी ﷺ का अनुसरण करते हुए क़िबला की ओर मुख करके दोनों हाथ उठाकर अत्यधिक ज़िक्र और दुआ करो।

5. सूरज निकलने से पहले लब्बैक कहते हुए मिना की ओर प्रस्थान करो। यदि हाजी कोई आपत्ति वाला हो, जैसे स्त्रियाँ या कमज़ोर लोग साथ हों तो आधी रात के पश्चात ही मिना के लिए रवाना हो सकते हैं। अपने साथ केवल सात कंकरियां ले लो ताकि

जमरा अक़बा की रमी कर सको। बाक़ी कंकरियां मिना ही से चुन लो। ईद के दिन अक़बा के जमरे की रमी (कंकरी मारना) करने के लिए भी कंकरियां मिना ही से ले सकते हो।

6. मिना पहुँचने के बाद निम्नलिखित काम करो :

(क) जमरे अक़बा की रमी करो जो कि मक्का के निकट है। सात कंकरियां एक के बाद दूसरी मारो और हर कंकरी के साथ अल्लाहु अकबर कहो।

(ख) यदि तुम्हारे ऊपर क़ुर्बानी वाजिब है तो क़ुर्बानी करो, उसका मांस खाओ और भिक्षुओं और गरीबों को खिलाओ।

(ग) सिर के बाल मुंडवाओ या छोटे करवाओ, मुंडन करवाना श्रेष्ठ है, स्त्रियों के लिए उंगली के एक पोर के बराबर बाल काट लेना पर्याप्त होगा। यह सब इसी कर्म (तरतीब) में करना

उत्तम है, लेकिन यदि कोई काम आगे या पीछे होजाए तो कोई बात नहीं।

जमरे अक़बा की रमी और सिर के बाल कटवा लेने या छोटा करवा लेने के बाद पहला तहल्लुल प्राप्त हो गया, अब साधारण कपड़े पहन सकते हो, और स्त्री के अतिरिक्त इहराम के कारण निषिद्ध (ममनूअ) सारी वस्तुयें हलाल होगईं।

7. अब मक्का जाओ और तवाफे इफाज़ा करो। अगर हज्जे तमत्तुअ की नीयत थी तो इसके बाद सई भी करो और यदि क़िरान या इफराद की नीयत थी और तवाफे क़ुदूम के साथ सई कर ली थी तो तवाफे इफाज़ा के बाद सई नहीं है। इसके साथ ही इहराम की सभी रूकावटे समाप्त हो गईं, यहाँ तक की स्त्री भी।

तवाफे इफाज़ा और सई मिना की अवधि के बाद तक विलम्ब किया जा सकता है।

8. कुर्बानी के दिन तवाफे इफाज़ा और सई के बाद मिना वापस जाओ, और ग्यारह, बारह और तेरह की रातें –तशरीक़ के तीनों दिन–वहीं बिताओ। यदि कोई बारहवीं को शीघ्र करना चाहे तो कोई बात नहीं।

9. मिना में ठहरने के इन दो या तीन दिनों में ज़वाल के बाद तीनों जमरों को कंकरियां मारो, आरम्भ पहले जमरे से करो जो मक्का से अन्य दोनो जमरों की अपेक्षा अधिक दूर है, फिर दूसरे (वुस्ता) को और फिर जमरे अक़बा को। प्रत्येक को निरंतर सात सात कंकरियां मारो और हर बार 'अल्लाहु अकबर' कहो, पहले और दूसरे जमरे को कंकरियां मारने के बाद ठहरो और क़िबला की ओर मुख करके जो चाहो दुआ मांगो, परन्तु जमरे अक़बा की रमी के बाद न ठहरो।

अगर मिना में केवल दो ही दिन रहना चाहो तो दूसरे दिन सूर्यास्त से पूर्व ही वहां से

निकल जाओ, अगर सूर्यास्त मिना में ही हो गया तो तीसरे दिन भी रूको और कंकरियां मारो।

बहरहाल उत्तम यही है कि तीसरी रात भी मिना ही में बिताई जाए।

बीमार और कमज़ोर व्यक्ति के लिए जायज़ है कि कंकयिां मारने के लिए किसी को अपना नायब नियुक्त कर दे। नायब के लिए यह जायज़ है कि पहले अपनी ओर से फिर नायब बनाने वाले की ओर से एक ही स्थल पर कंकरियां मारे।

10. हज्ज पूरा हो जाने के पश्चात अपने देश वापस जाना चाहो तो तवाफे विदाअ करो, केवल हैज़ (मासिक धर्म) और निफास (शिशु जन्म के उपरान्त रक्त प्रवाह) वाली स्त्रियों के लिये इससे छूट है।

मोहरिम के लिए आवश्यक बातें

हज्ज व उमरा का इहराम बांधने वालों के लिए मिन्मनलिखित बातें आवश्यक हैं :

1. अल्लाह तआला ने जिन कामों को फर्ज़ बताया है उनका पालन करे, उदाहरणतः पाँच समय की नमाज़ जमाअत के साथ उनके समय पर पढे।

2. जिन कामों से अल्लाह तआला ने रोका है उनसे दूर रहे, गाली गलौज, गन्दी बातें, लांगिक संसर्ग, लड़ाई झगड़ा के कामों से बचता रहे।

3. अपनी बातों और कामों से मुसलमानों को कष्ट न पहुँचाये।

4. इहराम के कारण निषिध कामो से बचता रहे, जिनका विवरण निम्नलिखित है :

(क) अपने बाल या नाखुन न काटे अगर स्वयं ही कोई बाल या नाखुन अलग हो जाता है तो कोई बात नहीं।

(ख) अपने शरीर, कपड़े और खाने और पीने की किसी वस्तु में किसी प्रकार की सुगन्ध का प्रयोग न करे। इहराम की नीयत करने से पूर्व जो सुगन्ध प्रयोग की थी यदि उसका कोई प्रभाव रह गया हो तो कोई बात नहीं।

(ग) जब तक वह मोहरिम है किसी खुश्की (धर्ती) के जानवर का शिकार न करे, न उसे बिदकाए और न दूसरों क़ी इस काम में मदद करे।

(घ) स्त्रियों को विवाह का प्रस्ताव न भेजे और अपने या दूसरे की विवाह का कारण न बने। तथा जब तक इहराम में हो वास्ना हेतु स्त्री संसर्ग और हमबिस्तरी न करे। यह इहराम के निषेध पुरूष और महिला दोनों के लिए हैं।

इहराम के निषेध विशेषकर पुरूषों के लिए:

(क) किसी चिपकने वाली वस्तु से अपना सिर न ढाँके, छाता या गाड़ी की छत की छाया या सिर पर कोई सामान उठाने की अनुमति है।

(ख) क़मीज़ या उसके अर्थ में हर वह कपड़ा जो पूरे शरीर या शरीर के किसी अंग के लिए हो न पहने, यदि किसी को लुंगी प्राप्त न हो तो पाजामा और जूते न हों तो मोज़े पहन सकता है, इसी प्रकार टोपी, इमामा (पगड़ी) पाजामा या मोज़े भी प्रयोग न करे। स्त्री के लिए इहराम के समय दोनों हाथों में दसताने पहनना, नक़ाब या बुरक़े से अपने मुखड़े को छुपाना मना है, यदि अजनबी और गैर महरिम पुरूषों का सामना हो रहा है तो फिर मुखड़े को ओढ़नी या किसी अन्य वस्तु

से छिपाना वाजिब है वैसे ही जैसे बिना इहराम के वाजिब है।

अगर मोहरिम (इहराम बांधने वाला) भूलकर अनजाने में सिला हुआ कपड़ा पहन लेता है, अपने सिर को ढाँक लेता है, या सुगन्ध प्रयोग कर लेता है, या अपने बाल या नाखुन काट लेता है तो कोई जुर्माना नहीं, याद आने पर या आदेश जान लेने के बाद यह सब करना तुरन्त छोड़ दे या रोक दे।

मोहरिम के लिए जूता, अंगूठी, चश्मा, घड़ी, पेटी और पैसा तथा काग़ज़ की सुरक्षा के लिए थैली (बटुआ) रखना जायज़ है।

कपड़े बदलना और साफ करना, सिर व शरीर को धोना जायज़ है, यदि इन स्थितियों में बिना इच्छा के कोई बाल गिर जाता है तो कोई बात नहीं, जैसा कि मोहरिम को कोई घाव हो जाए तो कोई बात नहीं।

मस्जिद नबवी की ज़ियारत का तरीक़ा

1. मस्जिद नबवी की ज़ियारत और उसमें नमाज़ पढ़ने की नीयत से किसी भी समय मदीना मुनव्वरह की यात्रा मसनून है, इसलिए कि इसकी एक नमाज़ मस्जिद हराम (मक्का की मस्जिद) के अतिरिक्त दूसरी मस्जिदों की हज़ार नमाज़ों से श्रेष्ठ है।

2. मस्जिद नबवी की ज़ियारत के लिए इहराम और तलबिया की आवश्यकता नहीं और न ही हज्ज और उस (की ज़ियारत) के बीच बिल्कुल कोई सम्बन्ध है।

3. मस्जिद नबवी में प्रवेश करते समय पहले दायाँ पैर बढ़ाओ और 'बिस्मिल्लाह' कहो और नबी ﷺ पर दरूद पढ़ो और अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हारे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दे, और यह दुआ पढ़ो :

أَعُوذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ وَوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ، اللّٰهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

मैं अज़मत वाले अल्लाह की और उस के करीम चेहरे की और उस के हमेशा से रहने वाले राज्य की पनाह चाहता हूँ मर्दूद शैतान से, ऐ अल्लाह मेरे लिए अपने रहमत के दरवाज़े खोल दे।

दूसरी मस्जिदों में भी प्रवेश करते समय यह दुआ पढ़नी चाहिए।

4. मस्जिद मे प्रवेश करते ही सर्वप्रथम तहीयतुल मस्जिद पढ़ो, अगर रौज़ह में जगह मिल जाये तो बेहतर है अन्यथा मस्जिद में किसी और जगह।

5. फिर इसके पश्चात नबी ﷺ की क़ब्र की ओर मुख करके खड़े हो जाओ, फिर सम्मानपूर्वक धीमे स्वर में कहो :

السلام عليك أيها النبي ورحمة الله

फिर दरूद पढ़ो, और यह दुआ भी पढ़ी जा सकती है :

اللَّهُمَّ آتِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُودَ الذَّي وَعَدتَّه ، اللَّهُمَّ اجْزِهِ عَنْ أُمَّتِه أَفْضَلَ الْجَزَاء.

फिर थोड़ा दायें बढ़ कर अबू बक्र रज़ीयल्लाहु अन्हु की क़ब्र के सामने खड़े हो जाओ, सलाम करो और उनके लिए मग़फिरत और रहमत और प्रसन्नता की दुआ करो।

उसके बाद कुछ और दायें बढ़कर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र के सामने खड़े

होकर सलाम करो और उनकी मग़फिरत, रहमत और प्रसन्नता के लिए दुआ करो।

6. वज़ू करके मस्जिद कुबा जाना और उसमे नमाज़ पढ़ना सुन्न्त है। नबी ﷺ ने स्वयं ऐसा किया है और दूसरों को भी इसके लिए प्रोत्साहित किया है।

7. बक़ीअ क़ब्रिस्तान जिसमें उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र है, उहुद के शहीदों जिसमें हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु भी सम्मिलित हैं उनकी ज़ियारत भी मसनून है, उनको सलाम करो और उनके लिए दुआ करो, इसलिए कि नबी ﷺ उनकी ज़ियारत करते और उनके लिए दुआ करते थे। और सहाबा को सिखाते थे कि जब क़ब्रों की ज़ियारत करो तो कहो :

"السَّــلاَمُ عَلَــيْكُمْ أَهْــلَ الدِّيَــارِ مِــنَ الْمُؤْمِنِــيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَ إِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لاَحِقُوْنَ نَسْأَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ" [رواه مسلم]

ऐ इस घर (क़ब्र तथा बर्ज़खी घर) वाले मोमिनों और मुसलमानों तुम पर सलाम हो, और हम भी अल्लाह ने चाहा तो तुम से मिलने वाले हैं, हम अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से आफियत (शान्ति) का सवाल करते हैं। (मुस्लिम)

मदीना में कोई दूसरी मस्जिद या स्थान नहीं है जिसकी ज़ियारत मशरूअ (शरीयत के अनुसार) हो। इसलिए अपने को कष्ट में न डालो और न ही कोई ऐसा काम करो जिसका बदला न मिले बल्कि उलटा गुनाह का खतरा है, और अल्लाह ही तौफीक़ देने वाला है।

हाजियों से प्रायः होने वाली गलतियाँ

प्रथम: इहराम की गलतियाँ :

बिना इहराम बाँधे आगे निकल जाए यहाँ तक कि जिद्दह या मीक़ात की सीमा के अन्दर किसी और स्थान पर पहुँच जाये और वहाँ से इहराम बाँधे। यह रसूल ﷺ के आदेश के विरूद्ध है, बल्कि हर हाजी उस मीक़ात से इहराम बाँधे जहाँ से गुज़र रहा है। अतः जो कोई मीक़ात से आगे निकल जाये उसे लौट कर, यदि सम्भव हो, तो मीक़ात से इहराम बांधना चाहिए, अन्यथा उस पर एक फ़िदिया (त्रुटि को समाप्त करने के लिए एक बकरी या भेड़) वाजिब है जिसे मक्का मे ज़बह करे और सारा का सारा ग़रीबों को खिला दे, चाहे वह हवाई रास्ते से आया हो, या खुश्की

(धरती) के रास्ते से आया हो या समुद्री रास्ते से आया हो।

यदि मीक़ात के पाँच विख्यात स्थानों में से किसी भी स्थान से गमन न हो तो पहले पड़ने वाले मीक़ात के बराबर में पहुँच जाए तो इहराम बाँधे।

द्वितीयः तवाफ की गलतियाँ :

1. हज्रे अस्वद से पूर्व ही तवाफ प्रारम्भ कर देना, जबकि वाजिब यह है कि तवाफ का आरम्भ हज्रे अस्वद से होना चाहिए।

2. हिज्रे काबा (हतीम) के अन्दर से तवाफ करना, ऐसी दशा में उसने काबा का तवाफ नहीं किया, बल्कि उस के कुछ भाग का तवाफ किया। इसलिए कि हिज्र (हतीम) काबा का एक हिस्सा है। इस तरह उसका एक चक्कर जो उसने हिज्र के अन्दर से किया है अमान्य हो जायेगा।

3. तवाफ के सातों चक्करों में तेज़ चलना (रमल करना), जबकि ऐसा करना तवाफे क़ुदूम के केवल आरम्भ के तीन चक्करों के साथ विशेष है।

4. हज्रे अस्वद को चुम्बन देने के लिए अत्यधिक संघर्ष करना, कभी–कभी मार पीट और गाली गलौज की स्थिति आ जाती है। ऐसा करना कदापि सहीह नहीं ; क्योंकि इसमें दूसरे मुसलमानों को कष्ट देना है, और इसलिए भी कि एक मुसलमान का अपने भाई को बेजा गाली गलौज देना और मार पीट करना जायज़ नहीं है।

तवाफ के सहीह होने के लिए हज्रे अस्वद को चुम्बन देना बिल्कुल आवश्यक नहीं है, बल्कि जब उसके बराबर में पहुँच जाये तो दूर से केवल संकेत करना और अल्लाहु अकबर कहना पर्याप्त है।

5. हज्रे अस्वद को बरकत प्राप्त करने की नीयत से छूना बिदअत है, शरीयत में इसका कोई स्थान नहीं, सुन्नत केवल उसका स्पर्श (छूना) या चुम्बन देना है अल्लाह तआला की इबादत के लिए।

6. काबा के तमाम कोनों को छूना और प्रायः उसकी सारी दीवारों का छूना। हालांकि नबी ﷺ ने हज्रे अस्वद और रूकने यमानी के अतिरिक्त किसी भाग को नहीं छुआ है।

7. तवाफ के हर चक्कर के लिए अलग–अलग दुआओं का चुनना। यह भी रसूल ﷺ से सिद्ध नहीं, केवल इतना सिद्ध है कि जब हज्रे अस्वद के निकट आते तो तकबीर कहते थे और हज्रे अस्वद और रूकने यमानी के बीच हर चक्कर के अन्त में यह दुआ पढ़ते :

﴿ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴾ [البقرة:٢٠١]

ऐ हमारे रब ! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर और प्रलोक में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक के अज़ाब से बचा।

(सूरतुल बक़रः 201)

8. कुछ तवाफ करने वाले और तवाफ कराने वाले तवाफ की स्थिति में इतना ऊंचा स्वर करते हैं कि अन्य तवाफ करने वालों को व्याकुलता और अशान्ति होती है।

9. मुक़ामे इब्राहीम के निकट नमाज़ पढ़ने के लिए संघर्ष करना सुन्नत के विरूद्ध है और इससे तवाफ करने वालों को कष्ट पहुँचता है। मस्जिद में किसी जगह पर भी तवाफ की दो रिकअतें पढ़ लेना पर्याप्त होगा।

तीसरीः सई की गलतियाँ :

1.कुछ लोग सफा और मरवा पहुँच कर काबा की ओर मुख करके तकबीर कहते हुए उसकी ओर इस प्रकार अपने हाथों से संकेत करते हैं जैसे नमाज़ के लिए तकबीर कह रहे हों। इस प्रकार संकेत करना सहीह नहीं है, सुन्न्त यह है कि जिस प्रकार दुआ के लिए अपनी हथेली उठाते हैं उसी प्रकार अपनी हथेली उठायें।

2. कुछ लोग सफ़ा व मरवा के बीच सई की अवधि में पूरा समय दौड़ते रहते हैं, जबकि सुन्नत यह है कि केवल दोनों हरे चिन्हों के बीच दौड़े और अतिरिक्त समयं में चलता रहे।

चौथी: अरफात के मैदान की गलतियाँ:

1. कुछ हाजी अरफात के मैदान के बाहर ही पड़ाव डाल देते हैं और सूर्यास्त तक वहीं रहते हैं और अरफात में बिना ठहरे ही मुज़दलिफा लौट आते हैं, यह बहुत बड़ी त्रुटि है जिससे हज्ज अमान्य हो जाता है, इसलिए कि हज्ज वकूफ़ अरफ़ा (अरफ़ात में ठहरने) का नाम है। हाजी के लिए आवश्यक है कि अरफ़ात की सीमा के अन्दर रहे उसके बाहर नहीं, अगर (भीड़ या किसी और कारणवश) ऐसा सम्भव नहीं है तो सूर्यास्त के पूर्व प्रवेश करे और सूर्यास्त तक ठहरा रहे, अरफ़ात की सीमा में रात के समय, विशेषकर क़ुर्बानी की रात में प्रवेश करना पर्याप्त होगा।

2. कुछ हाजी सूर्यास्त के पूर्व ही अरफ़ात से वापस लौट जाते हैं ऐसा करन सहीह नहीं। इसलिए कि रसूल ﷺ अरफ़ात में उस समय

तक ठहरे रहे जब तक सूरज पूरी तरह से अस्त न हो गया।

3. कुछ लोग अरफ़ात की पहाड़ी की चोटी तक पहुँचने के लिए भीड़ करके दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं। पूरे अरफ़ात में किसी भी स्थान पर ठहरना सहीह है और पहाड़ पर चढ़ना जायज़ नहीं, और न ही वहाँ नमाज़ पढ़ना सहीह है।

4. कुछ लोग दुआ करते समय अरफ़ात की पहाड़ी की ओर मुख करते हैं जबकि क़िबला की ओर मुख करना सुन्नत है।

5. कुछ लोग अरफ़ा के दिन विशिष्ट स्थानों पर मिट्टी और कंकरियों का ढेर लगाते हैं, ऐसा करना अल्लाह तआला की शरीयत में सिद्ध नहीं है।

पाँचवीः मुज़दलिफा की गलतियाँ :

कुछ लोग ऐसा करते हैं कि मुज़दलिफ़ा पहुँचते ही मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़ने से पहले ही कंकरियां चुनना प्रारम्भ कर देते हैं और यह समझते हैं कि कंकरियां मुज़दलिफ़ा ही से होनी चाहियें। हालांकि सहीह बात यह है कि कंकसियां हरम की सीमा के अन्दर, कहीं से भी ली जा सकती हैं, बल्कि साबित यह है कि रसूल ﷺ ने अपने लिए जमरे अक़बा की कंकरियॉ मुज़दलिफ़ा से चुनने का आदेश नहीं दिया था, बल्कि सुबह को मुज़दलिफ़ा से लौटने के पश्चात मिना से चुनी गई थीं। इसी प्रकार अन्य दिनों कि कंकरियां भी मिना से ली गई थीं। कुछ लोग कंकरियों को पानी से धोते हैं, यह भी शरीयत में नहीं है।

छठी: रमी (कंकरियाँ मारने) की ग़लतियाँ:

1. कुछ लोग कंकरी मारते समय यह विश्वास रखते हैं कि वह शैतान को मार रहे हैं, इसीलिए क्रोध प्रकट करते हैं और गालियाँ भी देते हैं। हालांकि जमरों पर कंकरी मारने का उद्देश्य अल्लाह तआला को याद करना है।

2. जमरों की रमी के लिए बड़े पत्थर, जूते या लकड़ी का प्रयोग दीन में ग़ुलू और ज़ियादती है। रसूल ﷺ ने धर्म के अन्दर ग़ुलू से मना किया है और इन से रमी भी नहीं होती।

मशरूअ यह है कि छोटी कंकरियां प्रयोग की जायें जो बकरी की मेंगनी के आकार की हों।

3. कंकरियां मारते समय धक्का–मुक्की और मार–धाड़ करना शरीयत के विरूद्ध है, प्रयास यह होना चाहिए कि नरमी से काम ले और

यथाशक्ति किसी को भी बिना कष्ट पहुँचाए कंकरियां मारे।

4. सारी कंकरियां एक ही बार मार देना सहीह नहीं। उलमा (ज्ञानियों) का फतवा यह है कि ऐसी स्थिति में केवल एक कंकरी की गणना होगी, इसलिए कि शरीयत का आदेश यह है कि कंकरियां एक–एक करके मारी जायें और प्रत्येक कंकरी के साथ तकबीर (अल्लाहु अकबर) कही जाए।

5. क्षमता रखते हूए कष्ट और भीड़ के डर से कंकरी मारने के लिए किसी दूसरे को नायब नियुक्त करना सहीह नहीं है, बीमारी या किसी और कारणवश क्षमता न रखने की स्थिति में ही नायब बनाना जायज़ है।

सातवीं: तवाफे–विदाअ की ग़लतियाँ :

1. कुछ लोग बारह या तेरह तारीख को कंकरियां मारने से पूर्व ही मिना से मक्का

आते हैं, तवाफे–विदाअ करते हैं फिर मिना जाकर कंकरिया मारते हैं, और वहीं से अपने शहर (देश) वापस हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में अन्तिम काम जमरों की रमी होता है न कि काबा का तवाफ। जबकि रसूल ﷺ का निर्देश है कि मक्का से प्रस्थान से पूर्व अन्तिम काम बैतुल्लाह का तवाफ होना चाहिए। इसलिए तवाफ–विदाअ हज्ज के कामों की समाप्ति के पश्चात और यात्रा से थोड़ा पहले होना चाहिए। उसके पश्चात मक्का में न ठहरे सिवाय इसके कि कोई साधारण कार्य हो।

2. कुछ लोग तवाफे–विदाअ के पश्चात मिस्जद–हराम के द्वार से उल्टे पाँव निकलते हैं, और मुख काबा की ओर होता है। वह समझते हैं कि ऐसा करना काबा का सम्मान है, जबकि वह बिल्कुल बिदअत है दीन में इसकी कोई हक़ीक़त नहीं।

3. कुछ लोग तवाफे–विदाअ के पश्चात मस्जिदे हराम के द्वार पर पहुँच कर काबा की ओर मुख करके खूब दुआयें करते हैं, जैसे कि काबा को विदाअ कर रहे हैं। यह भी बिदअत है, शरीयत में इसका कोई आधर (बुनियाद) नहीं।

आठवीं: मस्जिदे–नबवी की ज़ियारत सम्बन्धी ग़लतियाँ:

1. कुछ लोग रसूल ﷺ की क़ब्र की ज़ियारत करते समय दीवारों व लोहे की छड़ों पर हाथ फेरते हैं, खिड़कियों में बरकत की नीयत से धागे इत्यादि बांधते हैं। हालांकि बरकत उन कामों से प्राप्त होती है जिन्हें अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने जायज़ बताया है, बिदअत से बरकत नहीं प्राप्त हो सकती।

2. उहुद पहाड़ी की गुफाओं, इसी प्रकार मक्का में सौर व हिरा की गुफाओं की

ज़ियारत के लिए जाना, वहाँ धागे इत्यादि बांधना, शरीयत के प्रतिकूल दुआयें करना तथा इन सब कामों के लिए कष्ट उठाना बिदअत है। पवित्र शरीयत में उसका कोई आधार नहीं।

3. कुछ स्थानों के बारे में यह विचार किया जाता है कि उनका संबंध रसूल ﷺ से रहा है, जैसे के ऊँटनी के बैठने का स्थान, अंगूठी वाला कुआँ, उसमान रज़ियल्लाह अन्हु का कुआँ इत्यादि। उन स्थानों की ज़ियारत करना और बरकत के लिए वहाँ की मिट्टी लेना (बिदअत है)।

4. उहुद के शहीदों और बक़ीअ की क़ब्रों की ज़ियारत के समय मृतकों को पुकारना, क़ब्रो की निकटता तथा क़ब्र वालों की बरकत प्राप्त करने के लिए वहाँ पैसे डालना आदि सब बड़ी भयानक त्रुटियाँ हैं, बल्कि शिर्क अकबर (महान शिर्क) है, जैसा कि विद्वानों ने लिखा

है। अल्लाह की किताब और रसूल ﷺ की सुन्नत में इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। इसलिए कि इबादत केवल अल्लाह के लिए है उसके सिवा किसी और के लिए किसी भी प्रकार की इबादत जायज़ नहीं है, जैसेकि दुआ व कुर्बानी, नज़र व नियाज़ इत्यादि। अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلاَّ لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ﴾

[البينة: ٥]

उनको इस बात का आदेश दिया गया है कि केवल अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म खालिस (शुद्ध) कर रखें।

(सूरतुल बय्यिनाः 5)

यह भी कथन है :

﴿وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلا تَدْعُو مَعَ اللَّهِ أَحَداً﴾

[الجن:١٨].

मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं, अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारें। (सूरतुल जिन्नः 18) हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह मुसलमानों की दशा सुधारे, उनको दीन की गहन समझ दे और हम सब को त्रुटियों और फितनों से सुरक्षित रखे, वही सुनने वाला और स्वीकार करने वाला है।

हज्ज व उमरा और मस्जिद – नबवी ﷺ की ज़ियारत करने वालों के लिए संछिप्त निर्देश

हाजी पर वाजिब है किः

1. सर्वप्रथम सच्चे मन से सारे पापों का पश्चाताप करे, और अपने हज्ज और उमरा के लिए हलाल माल का चुनाव करे।
2. झूठ, पीठ पाछे बुराई, चुग़लखोरी और दूसरों की हंसी उड़ाने से अपने को सुरक्षित रखे।
3. हज्ज और उमरा का आशय अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति और आख़िरत की तैयारी हो। उद्देश्य ख्याति प्राप्ति करना, गर्व या प्रदशर्न न हो।
4. हज्ज व उमरा के संस्कार (चाहे वह कथन हों अथवा करनी) का ज्ञान प्राप्त करे और कठिन समस्याओं को दूसरों से पूछे।

5. हाजी जब मीक़ात पर पहुंचे तो उसे अधिकार है कि इफराद, क़िरान और तमत्तुअ में से किसी की नीयत करे। लेकिन यदि कोई कुर्बानी का जानवर नहीं लाया है तो उसके लिए हज्ज तमत्तुअ श्रेष्ठ है और जो व्यक्ति जानवर लाया है उसके लिए हज्ज क़िरान करना श्रेष्ठ है।

6. यदि किसी बीमारी या भय के कारण मोहरिम को यह डर हो कि हो सकता है कि वह अपना हज्ज पूरा न कर पाये, तो उत्तम यह है कि नीयत करते समय इन शब्दों की भी वृद्धि करे :

"إن محلي حيث حبستني"

''जहां मैं किसी कारणवश रूक जाऊँ वहीं हलाल हो जाऊँगा''।

7. छोटे बच्चे या बच्ची का हज्ज सहीह होगा, परन्तु व्यस्क होने पर फर्ज़ हज्ज की ओर से पर्याप्त नहीं होगा।

8. इहराम की अवस्था में कोई भी नहा सकता है, अपना सिर धो सकता है और खुजला सकता है।

9. स्त्री अपने मुख पर दुपट्टा डाल सकती है, यदि डर हो कि ग़ैर महरिम लोग उसकी ओर देख रहे हैं।

10. अनेक स्त्रियाँ दुपट्टे के नीचे किसी कड़ी वस्तु का प्रयोग करती हैं ताकि उसको चेहरे से दूर रखा जाए शरीयत के अन्दर इसकी कोई वास्तविक्ता नहीं हैं।

11. मोहरिम अपने इहराम के कपड़े धो सकता है, और उसके बदले दूसरे कपड़े पहन सकता है।

12. यदि मोहरिम आदमी ने भूल से या नादानी से सिला हुआ कपड़ा पहन लिया, या

सिर ढाँक लिया, या सुगन्ध लगा लिया तो वह दण्ड का भागी नहीं है।

13. हाजी काबा के निकट पहुँचते ही तवाफ आरम्भ करने से पूर्व (यदि हज्ज तमत्तुअ या उमरा की नीयत है) तलबिया पुकारना बन्द कर देगा।

14. तवाफ के प्रथम तीन चक्करों में तीव्र चलना (रमल करना) और दायीं बगल के नीचे से चादर निकाल कर कन्धा खुला रखना केवल तवाफ़ क़ुदूम में शरीयत के अनुसार है और केवल पुरूषों के लिए स्त्रियों के लिए नहीं।

15. यदि हाजी को शंका होजाए कि उसने तवाफ़ या सई के तीन चक्कर लगाये हैं या चार तो तीन का भरोसा करे।

16. यदि भीड़ अधिक बढ़ जाये तो ज़मज़म और मुक़ामे इब्राहीम के पीछे से तवाफ करने

में कोई हर्ज नहीं बल्कि पूरी मस्जिद का निचला और ऊपरी भाग तवाफ का स्थान है।

17. स्त्री के लिए यह गुनाह की बात है कि तवाफ़ की स्थिति में श्रृंगार किये हुए, सुगन्धित व बिना पर्दे के हो।

18. यदि इहराम की नीयत के पश्चात स्त्री को माहवारी आरम्भ हो जाती है या बच्चे को जन्म देती है तो पवित्र होने से पहले बैतुल्लाह का तवाफ़ उचित न होगा।

19. स्त्री किसी भी कपड़े में इहराम की नीयत कर सकती है, शर्त केवल यह है कि पुरूषों के समान वस्त्र न धारण करे तथा इस बात का ध्यान रखे कि श्रृंगार का प्रदर्शन न करे बल्कि ऐसे कपड़ों में इहराम की नीयत करे जो ध्यान आकर्षक न हों।

20. हज्ज व उमरा के अतिरिक्त किसी भी दूसरी इबादत की नीयत को शब्दों में करना

बिदअत है और ऊँचे स्वर में कहना और भी बुरा है।

21. वयस्क मुसलमान के लिए हराम है कि बिना इहराम के मीक़ात से आगे बढ़े (यदि हज्ज या उमरा की नीयत की है)

22. जो हाजी हज्ज या उमरा करने वाले वायुयान से आते हैं वे जब मीक़ात के सामने आयें तो इहराम की नीयत करें परन्तु मीक़ात के सामने आने से पूर्व इहराम की तैयारी कर लें। और जब यान में सोने अथवा भूल जाने की शंका हो तो इहराम की नीयत मीक़ात से पूर्व करने में कोई आपत्ति नहीं।

23. कुछ लोग हज्ज के पश्चात तनईम और जेइर्राना से अनेकों बार उमरा करते हैं, इस तथ्य के लिए शरीयत में कोई प्रमाण नहीं है।

24. हाजी आठवीं तारीख को मक्का मुकर्रमा में अपने ठहरने के स्थान से ही इहराम बांध लेंगे। मक्का नगर के अंदर से या मीज़ाब के

समीप से इहराम आवश्यक नहीं है जैसाकि बहुत से लोग करते हैं और मिना जाते समय तवाफ विदाअ भी नहीं।

25. नवीं तारीख को मिना से अरफात के लिए प्रस्थान करना सुर्योदय के पश्चात श्रेष्ठ है।

26. सूर्यास्त से पूर्व अरफात से वापसी जायज़ नहीं। सूर्यास्त के पश्चात वापसी के लिए प्रस्थान पूर्ण शान्ति व सन्तोष से करना चाहिए।

27. मुज़दलिफ़ा पहुँचने के बाद मग़रिब व इशा की नमाज़ पढ़ी जायेगी, चाहे मग़रिब का समय बचा हो या इशा का समय आरम्भ हो चुका हो।

28. कंकरियां कहीं से भी ले सकते हैं, मुज़दलिफ़ा से लेना आवश्यक नहीं।

29. कंकरियों को धोना मुस्तहब नहीं है, इसलिए कि इसका प्रमाण रसूल ﷺ से या सहाबा ؓ से नहीं मिलता।

30. निर्बल स्त्रियां और बच्चे (जो उनके संरक्षण में हों) रात के अन्तिम भाग में मुज़दलिफ़ा से मिना प्रस्थान कर सकते हैं।

31. हाजी जब ईद के दिन मिना पहुँचे तो जमरा अक़बा की रमी के समय लब्बैक कहना बन्द कर दे।

32. यह आवश्यक नहीं है कि कंकरियां अपने स्थान (हौज़) पर ही बाक़ी रहें बल्कि शर्त यह है कि उसकी सीमा (हौज़) में गिरें।

33. कुर्बानी का समय विद्वानों के सहीह मत के अनुसार तशरीक़ के तीसरे दिन के सूर्यास्त तक है।

34. तवाफ़ ज़ियारत (इफ़ाज़ा) हज्ज के स्तम्भों में से एह स्तम्भ है जिसके बिना हज्ज की

पूर्ति नहीं होती, लेकिन मिना के निवास काल के पश्चात तक इसका विलम्ब जायज़ है।

35. हज्जुल इफराद और हज्जुल क़िरान करने वाले पर केवल एक सई अनिवार्य है।

36. हाजी के लिए बेहतर है कि क़ुर्बानी के दिन के कामों में क्रम का ध्यान रखे। सर्वप्रथम जमरा अक़बा पर कंकरी मारे, फिर क़ुर्बानी करे, फिर सिर के बाल मुंडवाए या कटवाए, फिर बैतुल्लाह का तवाफ़ करे, उसके बाद सई करे। यदि इन कामों में कुछ को कुछ से पूर्व करे तो कोई हानि नहीं।

37. वे काम जिनको कर लेने के बाद आदमी पूर्णरूप से हलाल हो जाता है:

क. जमरा अक़बा की रमी करना

ख. सिर के बाल मुंडवाना या कटवाना

ग. तवाफ़ ज़ियारत (इफाज़ा) और सई

38. यदि हाजी मिना से जल्दी वापस आने का इच्छुक है तो बारह तारीख को सूर्यास्त के पूर्व ही मिना से निकल जाये।

39. जो बच्चा रमी न कर सकता हो, उसकी ओर से उसका संरक्षक अपनी रमी कर लेने के बाद उसकी ओर से रमी करेगा।

40. यदि कोई व्यक्ति बीमारी या बुढ़ापे आदि के कारण रमी करने योग्य न हो तो अपने लिए किसी को नियुक्त कर दे।

41. नियुक्त व्यक्ति के लिए जायज़ है कि एक ही समय में तीनों जमरात में से हर एक की पहले अपनी रमी करे फिर उसकी जिसके लिए नियुक्त है।

42. यदि हाजी जिसका हज्ज तमत्तुअ या क़िरान है और वह मक्का का नागरिक नहीं है, तो उस पर क़ुर्बानी वाजिब है, और वह एक बकरी, अथवा गाय या ऊँट का सातवाँ भाग है।

43. क़िरान या तमत्तुअ करने वाले हाजी के पास क़ुर्बानी करने की ताक़त नहीं है तो तीन दिन हज्ज की अवधि में रोज़ा रखे और सात रोज़े घर पहुँच जाने के पश्चात रखे।

44. हाजी के लिए अच्छा यह है कि यह तीन रोज़े अरफात के दिन से पूर्व ही रख लिए जायें ताकि अरफ़ा के दिन रोज़े की अवस्था में न रहे। यदि पहले न रख सके तो तशरीक़ के दिनों में रख ले।

45. उपरोक्त तीनों रोज़े लगातार या अलग–अलग भी रखे जा सकते हैं, परन्तु तशरीक़ के दिनों से अधिक विलम्ब न करे। इसी प्रकार शेष सात रोज़े भी लगातार और अलग–अलग रखना वैध है।

46. तवाफ़ विदाअ हर हाजी पर वाजिब है सिवाय हैज़ व निफास वाली स्त्रियों के।

47. मस्जिद नबवी की ज़ियारत करना सुन्नत है, हज्ज के पूर्व अथवा हज्ज के पश्चात या साल के किसी भी समय।

48. मस्जिद नबवी की ज़ियारत करने वाला पहले मस्जिद नबवी में किसी भी स्थान पर दो रिकअतें तहीयतुल मस्जिद की पढ़े और अच्छा यह है कि यह दोनों रिकअतें रौज़ा शरीफ़ में पढ़े।

49. रसूल ﷺ की क़ब्र की ज़ियारत व दूसरी क़ब्रों की ज़ियारत केवल पुरूषों के लिए जायज़ है स्त्रियों के लिए नहीं। पुरूषों के लिए भी इस शर्त के साथ कि यात्रा क़ब्र की ज़ियारत की नीयत से न हो।

50. हुजरा को छूना, उसको चुम्बन देना या उसका तवाफ़ करना बहुत बुरी बिदअत है जिसका प्रमाण पूर्वजों से नहीं मिलता और यदि तवाफ का उद्देश्य रसूल ﷺ की निकटता

प्राप्त करना हो तो यह महान शिर्क (अल्लाह के साथ किसी और को साझी ठहराना) है।

51. रसूल ﷺ से किसी आवश्यकता की पूर्ति करने या किसी विपत्ति को टालने का सवाल करना शिर्क है।

52. रसूल ﷺ की जीवन क़ब्र में 'बरज़ख़ी' जीवन है, मृत्यु से पूर्व जैसा जीवन नहीं है, उसकी वास्तविकता और स्वभाव का ज्ञान केवल अल्लाह को है।

53. कुछ ज़ियारत करने वाले रसूल ﷺ की क़ब्र के पास उसकी ओर मुख करके, दोनों हाथों को उठाकर दुआ करने का अवसर ढूँढते हैं, ऐसा करना नवीन बिदअतों में से है।

54. रसूल ﷺ की क़ब्र की ज़ियारत न ही वाजिब है और न ही हज्ज की पूर्ति के लिए

कोई शर्त है, जैसाकि कुछ अवाम लोग (जनता) समझते हैं।

55. जिन हदीसों से रसूल ﷺ की क़ब्र की ज़ियारत की नियत से यात्रा करने को वैध सिद्ध किया जाता है वे या तो मनगढ़न्त हैं या उनकी सनदें ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं।

दुआयें

ये सब दुआयें या जितनी हो सकें अरफ़ात, मशअरे हराम और अन्य दुआ के स्थानों में करना बेहतर है।

اللّٰهُمَّ إنِّي أَسْأَلُكَ العَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِيْنِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي. اللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللّٰهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِيْنِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظْمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِن تَحْتِي.

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी दरगुज़र का इच्छुक हूँ और अपने धर्म में, अपनी दुनिया में, अपने परिवार में और अपने धन में क्षमा व अच्छाई का आकांक्षी हूँ। ऐ अल्लाह ! मेरी छुपी बुराईयों को छुपाये रख और भय से

सुरक्षित रख। ऐ अल्लाह ! जो कुछ मेरे आगे है या मेरे पीछे है, मेरे दायें है या मेरे बायें है और मेरे ऊपर है, मुझे सुरक्षित रख। और मैं इस बात से तेरी अज़मत की पनाह चाहता हूँ कि सहसा अपने नीचे से हत्या कर दिया जाऊँ।

"اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي ، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي. لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالفَقْرِ وَمِنْ عَذَابِ القَبْرِ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

ऐ अल्लाह ! मुझे मेरे शरीर में आफियत दे। मेरे कानों व मेरी आँखों में आफियत दे। तेरे अतिरिक्त कोई माबूद नहीं। ऐ अल्लाह ! मैं कुफ़्र से, दरिद्रता से और

क़ब्र की यातना से तेरी पनाह माँगता हूँ। तेरे अतिरिक्त कोई माबूद नहीं।

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوْءُ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِيْ، فَإِنَّه لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلاَّ أَنْتَ.

ऐ अल्लाह ! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तूने ही मुझे पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूँ और अपने बस भर तेरी प्रतिज्ञा व वायदे पर दृढ़ हूँ। अपने कुकर्मों के शर (बराई) से तेरी शरण माँगता हूँ , तेरे द्वारा प्रदान कृपाओं को स्वीकार करता हूँ और बुराईयों को मानता हूँ। मुझे क्षमा

कर दे, तेरे सिवा कोई दूसरा क्षमा नहीं दे सकता।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَمِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلْبَةِ الدَّيْنِ، وَقَهْرِ الرِّجَالِ. اللَّهُمَّ اجْعَلْ أَوَّلَ هَذَا الْيَوْمِ صَلاَحاً، وَأَوْسَطَهُ فَلاَحاً، وَآخِرَهُ نَجَاحاً، وَأَسْأَلُكَ خَيْرَيِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ दुख और शोक से, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अक्षमता और सुस्ती से, कंजूसी और कायरता से। और मैं ऋण के बोझ, मनुष्य के हिंसा और आतंक से तेरी पनाह का इच्छुक हूँ। ऐ अल्लाह ! आज के दिन का

आरम्भ अच्छा, आज का मध्य सम्पन्न और आज का अन्त सफल बना दे। ऐ सब से अधिक दयावान ! मैं तुझसे आखिरत और दुनिया की भलाई माँगता हूँ।

اللّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الرِّضَى بَعْدَ الْقَضَاءِ، وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَلَذَّةَ النَّظَرِ إلى وَجْهِكَ الْكَرِيمِ، وَالشَّوْقَ إلى لِقَاءِك، فِي غَيْرِ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ، وَلاَ فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ، وَأَعُوْذُ بِكَ أَنْ أَظْلِمَ أَوَ أُظْلَمِ، أَوْ أَعْتَدِيَ أَوْ يُعْتَدَى عَلَيَّ، أَوْ أَكْتَسِبَ خَطِيْئَةً أَوْ ذَنْباً لا تَغْفِرُه.

ऐ अल्लाह ! मैं तेरे निर्णय पर अटल रहने की क्षमता, मृत्यु के बाद अच्छी जीवन का बदला और तेरी मुखाकृति देखने की उत्सुकता और तुझसे मिलने का शौक़

मांगता हूँ, इस तरह कि न किसी को नुक़सान पहुँचे, न किसी बड़ी बात का सामना करना पड़े। और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से कि किसी पर अत्याचार करूँ या मुझ पर अत्याचार किया जाए, या मैं किसी पर ज़ियादती (आक्रमण) करूँ या मुझ पर आक्रमण किया जाए, या ऐसी गलती करूँ या कोई ऐसा पाप जो तू क्षमा न करे।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ.

اللّٰهُمَّ اهْدِنِي لأَحْسَنِ الأَعْمَالِ وَالأَخْلاَقِ لاَ يَهْدِيْ لأَحْسَنِهَا إِلاَّ أَنْتَ. وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا لاَ يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلاَّ أَنْتَ.

ऐ अल्लाह मैं पनाह मांगता हूँ कि अत्यन्त बूढ़ेपन की आयु को पहुंचूँ। ऐ अल्लाह !

मुझे अच्छे चरित्र और अच्छे कार्य करने का निर्देश दे; क्योंकि कोई दूसरा इसकी हिदायत देने वाला नहीं। और मुझे बुरे कार्य और चरित्र से रोक दे; क्योंकि तेरे सिवा कोई बुरे कर्मों से रोकने वाला नही है।

اللّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِيْنِي، وَوَسِّعْ لِي فِي دَارِي ، وَبَارِكْ لِي فِي رِزْقِي. اللّهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْقَسْوَةِ وَالْغَفْلَةِ وَ الذِّلَّةِ وَالْمَسْكَنَةِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفُسُوْقِ وَالشِّقَاقِ وَالسُّمْعَةِ وَالرِّيَاء. وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الصَّمَمِ، وَالْبَكَمِ، وَالْجُذَامِ وَ سَيِّءِ الأَسْقَامِ.

ऐ अल्लाह ! मेरे दीन को सुधार दे और मेरे लिए मेरे घर के प्रसार और जीविका में

बरकत दे। ऐ अल्लाह ! मैं हृदय की कठोरता, लापरवाही, अपमान और दरिद्रता से पनाह मांगता हूँ। मैं कुफ़्र से, दुष्टता से, मतभेद से, झूठे अभिमान व आडम्बर और पाखण्ड से तेरी पनाह मांगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं गूंगेपन, बहरेपन, कोढ़ तथा अन्य दुष्ट बीमारियों से तेरी पनाह मांगता हूँ।

اللَّهُمَّ آتِ نَفْسِي تَقْوَاهَا، وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا، أَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلاَهَا. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لاَ يَنْفَعُ، وَقَلْبٍ لاَ يَخْشَعُ، وَنَفْسٍ لاَ تَشْبَعُ، وَدَعْوَةٍ لاَ يُسْتَجَابُ لَهَا.

ऐ अल्लाह! मेरी आत्मा में अपना भय और धर्मपरायणता उत्पन्न कर दे और मेरी आत्मा को शुद्धता प्रदान कर दे। तू ही

अच्छा पवित्र करने वाला है और उसका मालिक और रक्षक है। ऐ अल्लाह ! मैं ऐसे ज्ञान से जो लाभ न दे, ऐसे हृदय से जिसमें कम्पन (भय के कारण) न हो, ऐसी आत्मा से जिसकी तृप्ति न हो, ऐसी दुआ से जो स्वीकार न हो, तेरी पनाह मांगता हूँ।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ ، وَمِنْ شَرِّ مَالَمْ أَعْمَلْ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَلِمْتُ، وَمِنْ شَرِّ مَالَمْ أَعْلَمْ، اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ، وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ، وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ. وَجَمِيْعِ سَخَطِكَ.

ऐ अल्लाह ! मैं ऐसे पाप से जो कर चुका हूँ, ऐसे पाप से जो नहीं किया है, ऐसी बुराई से जो मैं जानता हूँ और ऐसी बुराई

से जो मैं नहीं जानता हूँ, तेरी पनाह मांगता हूँ। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी नेमतों (कृपाओं) के छीन लिए जाने से, तेरी दी हुई सुरक्षा के समाप्त होजाने से, तेरे क्रोध और अप्रसन्नता से और ऐसी बात से जो तेरी अप्रसन्नता का कारण बने, पनाह मांगता हूँ।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَالتَّرَدِّي وَمِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ وَالْهَرَمِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ يَتَخَبَّطَنِيَ الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أَمُوتَ لَدِيغاً، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ طَمَعٍ يَهْدِي إِلَى طَبَعٍ.

ऐ अल्लाह ! मैं पतन और क्षय से, डूबने और जलने से, बुढ़ापे की कमज़ोरी से तेरी पनाह चाहता हूँ और मृत्यु के समय शैतान

के उचकने से तेरी पनाह मांगता हूँ, और किसी विषैले जानवर के काटे जाने के कारण मृत्यु होने से भी पनाह माँगता हूँ। मैं इस बात से भी पनाह माँगता हूँ कि कोई लालच पैदा हो जो मेरा स्वभाव बन जाए।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الأَخْلاَقِ وَالأَعْمَالِ وَالأَهْوَاءِ وَالأَدْوَاءِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ، وَقَهْرِ الرِّجَالِ، وَشَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ.

ऐ अल्लाह ! मैं बुरे व्यवहार से, पसन्द न किये जाने वाले कर्मों, इच्छाओं और बीमीरियों से पनाह मांगता हूँ। और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ऋण के भार, लोगों के प्रकोप व क्रोध और दुशमनों के उपहास से।

اللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِينِي، الَّذِي هُوَ عِصْمَةُ أَمْرِي، وَأَصْلِحْ لِي دُنْيَايَ الَّتِي فِيهَا مَعَاشِيْ، وَأَصْلِحْ لِي آخِرَتِي الَّتِي فِيهَا مَعَادِي، وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِي فِي كُلِّ خَيْرٍ، وَالْمَوْتَ رَاحَةً لِي مِنْ كُلِّ شَرِّ، رَبِّ أَعِنِّي وَلاَ تُعِنْ عَلَيَّ، وَانْصُرْنِي وَلاَ تَنْصُرْ عَلَيَّ، وَاهْدِنِي وَيَسِّرِ الْهُدَى لِي.

ऐ अल्लाह ! मेरे दीन को सुधार दे कि वही मेरे कर्मों की रक्षा और बचाव है। मेरी दुनिया को सुधार दे जिसमें मेरी ज़िन्दगी है, और मेरी आख़िरत को सुधार दे कि वहीं लौट कर जाना है। मेरी ज़िन्दगी को हर प्रकार की भलाई में अधिकता का माध्यम बना और मेरी मौत को हर प्रकार की बुराईयों से राहत का सबब बना। ऐ

परवरदिगार ! मेरी मदद कर और मेरे विरूद्ध किसी की मदद न कर, और मुझे विजय प्रदान कर, दूसरों को मुझे हराने न दे। मुझको निर्देश दे और निर्देश का रास्ता मेरे लिए सरल कर दे।

اللّهُـمَّ اجْعَلْـنِي ذَكّـاراً لَـكَ ، شَـكّاراً لَـكَ ، مِطْوَاعـاً لَـكَ ، مُخْبِـتاً إِلَـيْكَ أَوَّاهـاً مُنِيْـباً، رَبِّ تَقَـبَّلْ تَوْبَـتِي ، وَاغْسِـلْ حَوْبَـتِي، وَأَجِـبْ دَعْوَتِـي ، وَثَبِّـتْ حُجَّتِي ، وَاهْـدِ قَلْبِي، وَسَدِّدْ لِسَانِي، وَاسْلُلْ سَخِيْمَةَ صَدْرِي.

ऐ अल्लाह ! मुझे बहुत ज़िक्र करने वाला, बहुत शुक्र करने वाला, बहुत आज्ञा पालन करने वाला, तेरी ओर बहुत झुकने वाला, सदैव अपनी त्रुटियों पर अफसोस करने वाला और ह्रदय से दुआ करने वाला बना

दे। ऐ रब ! तौबा (पश्चाताप) स्वीकार कर , मेरे पापों को धो दे, मेरी दुआ स्वीकार कर और मेरी दीनी सच्चाई को स्थापित रख। मेरे हृदय को निर्देश दे, मेरी ज़ुबान को ठीक रख और मेरे हृदय से गन्दे विचारों को दूर कर दे।

اللَهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الأَمْرِ، وَالْعَزِيْمَةَ عَلَى الرُّشْدِ ، وَأَسْأَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ وَأَسْأَلُكَ قَلْباً سَلِيْماً وَلِسَاناً صَادِقاً وَأَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ ، وَأَسْتَغْفِرُكَ مِمَّا تَعْلَمُ ، وَأَنْتَ عَلاَّمُ الْغُيُوْبِ.

ऐ अल्लाह ! मैं मामले में दृढ़ता और निर्देशों का पालन करने पर दृढ़ संकल्प

मांगता हूँ। तेरी नेमतों के शुक्र की तौफीक़ और तेरी इबादत की उत्तमक विधि की तौफीक़ मांगता हूँ। और एक पूर्ण हृदय और सच्ची ज़ुबान मांगता हूँ। उन तमाम भलाईयों की भीख मांगता हूँ जो तू जानता है और उन बुराईयों से शरण मांगता हूँ जो तू जानता है, और उन तमाम पापों के लिए क्षमा चाहता हूँ जो तेरे ज्ञान में है, निःसन्देह तू तमाम अदृश्य और गुप्त बातों को जानने वाला है।

اللَّهُمَّ أَلْهِمْنِي رُشْدِي ، وَقِنِي شَرَّ نَفْسِي. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ ، وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ, وَأَنْ تَغْفِرَ لِي وَتَرْحَمَنِي, وَإِذَا أَرَدْتَ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً، فَتَوَفَّنِي إِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ.

ऐ अल्लाह ! मुझे अच्छे चरित्र की प्रेरणा दे और मुझे स्वार्थ की बुराईयों से सुरक्षित रख। ऐ अल्लाह ! मुझे अच्छे काम करने और बुरे कामों से बचने का निर्देश दे। और ज़रूरत मन्दों से प्यार करने का निर्देश दे। मुझे तू क्षमा प्रदान कर एवं मेरे ऊपर दया कर, मैं इसकी प्रार्थना करता हूँ। और जब तू अपने बन्दों को किसी फितने मे डालना चाहे तो मुझे बचाकर मौत दे दे।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حُبَّكَ ، وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ ، وَحُبَّ كُلِّ عَمَلٍ يُقَرِّبُنِي إِلَى حُبِّكَ. اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَسْأَلَةِ، وَخَيْرَ الدُّعَاءِ وَخَيْرَ النَّجَاحِ ، وَخَيْرَ الثَّوَابِ ، وَثَبِّتْنِي وَثَقِّلْ مَوَازِيْنِي، وَحَقِّقْ إِيْمَانِي، وَارْفَعْ دَرَجَتِي، وَتَقَبَّلْ صَلاَتِي

وَعِبَادَاتِي ، وَاغْفِرْ خَطِيْئَاتِي ، وَأَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلَى مِنَ الْجَنَّةِ.

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी मुहब्बत की भीख मांगता हूँ, और जो तुझ से प्यार करे उससे प्यार और ऐसे कर्म जो तेरे प्यार का कारण हो उनके प्रति रूचि मांगता हूँ। ऐ अल्लाह ! तुझ से सवाल करने का उत्तम ढंग, अच्छी दुआयें, अच्छी सफलतायें और अच्छा बदला चाहता हूँ। मुझे दृढ़ता और स्थिरता प्रदान कर, मेरे अच्छे कर्मों के तराजू को भारी बना, मेरे ईमान को पक्का कर दे, मेरा पद ऊंचा कर दे, मेरी नमाज़ और उपासना स्वीकार कर और मेरे पापों को क्षमा कर दे और मैं तुझ से जन्नत के ऊँचे पद की प्रार्थतना करता हूँ।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فَوَاتِحَ الْخَيْرِ، وَخَوَاتِمَهُ وَجَوَامِعَهُ، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ، وَظَاهِرَهُ وَبَاطِنَهُ وَالدَّرَجَاتِ الْعُلَى مِنَ الْجَنَّةِ.

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे कर्मों व कृतियों के अच्छे आरम्भ, अच्छी समाप्ति, हर प्रकार की उनमें अच्छाईयों, प्रथम व अन्तिम, अन्दर व बाहर की अच्छाईयों और जन्नत के ऊंचे पद की प्रार्थना करता हूँ।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ أَنْ تَرْفَعَ ذِكْرِي، وَتَضَعَ وِزْرِيْ وَتُطَهِّرَ قَلْبِي وَتُحَصِّنَ فَرْجِي وَتَغْفِرَ لِي ذُنُوْبِي.

ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ कि तू मेरा चर्चा ऊँचा कर दे, मेरे बोझ कम कर दे, मेरे हृदय को पवित्र व शुद्ध कर

दे, मेरे गुप्तांग को सुरक्षित कर दे, मेरे पापों को माफ कर दे।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ أَنْ تُبَارِكَ فِي سَمْعِي، وَفِي بَصَرِي، وَفِي خَلْقِي، وَفِي خُلُقِي، وفِي أَهْلِي، وَفِي مَحْيَايَ، وَفِي عَمَلِي، وَتَقَبَّلْ حَسَنَاتِي وَأَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ العُلَى مِنَ الْجَنَّةِ.

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे बरकत मांगता हूँ, अपने कानों के लिए, अपनी आँखों के लिए, अपनी बनावट के लिए, अपने व्यवहार के लिए, अपने घर वालों के लिए, अपनी ज़िन्दगी के लिए और अच्छे कर्मों के लिए। तू मेरी नेकियों को स्वीकार कर, और मैं तुझसे जन्नत के ऊँचे पद की भीख मांगता हूँ।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلاءِ ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوْءِ الْقَضَاءِ، وَشَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ، اللّٰهُمَّ

مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ، ثَبِّتْ قَلْبِي عَلى دِيْنِكَ. اللّٰهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوْبِ ، صَرِّفْ قُلُوْبَنَا عَلى طَاعَتِكَ.

ऐ अल्लाह ! मैं कठिनाईयों, आपत्तियों, कष्टों, अत्याचार और दुश्मनों के उपहास से तेरी पनाह मांगता हूँ। ऐ दिलों को बदलने वाले अल्लाह ! मेरे हृदय को अपने दीन पर दृढ़ और स्थिर कर दे। ऐ दिलों के फेरने वाले अल्लाह ! हमारे दिलों को अपनी आज्ञा के पालन पर अटल रख।

اللّٰهُمَّ زِدْنَا وَلاَ تَنْقُصْنَا، وَأَكْرِمْنَا وَلاَ تُهِنَّا، وَأَعْطِنَا وَلاَ تَحْرِمْنَا، وَآثِرْنَا وَلاَ تُؤْثِرْ عَلَيْنَا.

اللّٰهُمَّ أَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِي الأُمُوْرِ كُلِّهَا ، وَأَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الآخِرَةِ.

ऐ अल्लाह ! तू हम को उन्नति दे अवनति न दे, सम्मान प्रदान कर अपमान न दे, हमको

प्रदान कर वंचित न कर, हम को प्रधानता दे हम पर किसी को प्रधानता न दे। ऐ अल्लाह ! तू हमारे सारे कामों का परिणाम अच्छा कर दे और दुनिया की बदनामी और आख़िरत की यातना से सुरक्षित रख।

اللّٰهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُوْلُ بِهِ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعْصِيَتِكَ، وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهِ جَنَّتَكَ ، وَمِنَ الْيَقِيْنِ مَا تُهَوِّنُ بِهِ عَلَيْنَا مَصَائِبَ الدُّنْيَا ، وَمَتِّعْنَا بِأَسْمَاعِنَا وَأَبْصَارِنَا وَقُوَّاتِنَا مَا أَحْيَيْتَنَا، وَاجْعَلْهَا الْوَارِثَ مِنَّا ، وَاجْعَلْ ثَأْرَنَا عَلَى مَنْ ظَلَمَنَا ، وَانْصُرْنَا عَلَى مَنْ عَادَانَا، وَلاَ تَجْعَلِ الدُّنْيَا أَكْبَرَ هَمِّنَا، وَلاَ مَبْلَغَ عِلْمِنَا، وَلاَ تَجْعَلْ

مُصِيبَتَنَا فِي دِيْنِنَا وَلاَ تُسَلِّطْ عَلَيْنَا بِذُنُوبِنَا مَنْ لاَ يَخَافُكَ وَلاَ يَرْحَمُنَا.

ऐ अल्लाह ! अपने भय का इतना अंश हमारे भाग्य में कर दे जो हमारे और तेरी आज्ञा के उल्लंघन के बीच रूकावट बन जाए। अपनी आज्ञापालन का इतना अंश भाग्य में कर दे जो हमको तेरी जन्नत में पहुँचा दे। विश्वास का वह अंश प्रदान कर जो हमारे लिए दुनिया की विपत्तियों को सरल कर दे। और हमें लाभ पहुँचा हमारे कानों से, हमारी आँखों से और हमारी शक्तियों से जब तक कि तू हमें जीवित रखे, और यह भलाईयाँ हमारे बाद बाक़ी रख। हमारे प्रतिशोध को उस पर प्रभावशाली रख जो हम पर अत्याचार करे और हमारी मदद कर उसके विरूद्ध जो हम से दुश्मनी रखे। ऐ अल्लाह ! दुनिया को हमारी सबसे प्रबल इच्छा न बना और न ही

हमारे ज्ञान का अन्त (चरम सीमा), दीन के मामले में हमें आज़माईशों मे न डाल। ऐ अल्लाह ! हमें हमारे पापों के कारण ऐसे लोगों के प्रभाव में न रख जो न तुझ से डरें और न हम पर दया करें।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ ، وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ، وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ ، وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ ، وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ، وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ.

ऐ अल्लाह ! तेरी रहमत प्रदान करने वाले कर्मों का और तेरी क्षमा का। इसी प्रकार हर अच्छाई के करने की आसानी, हर पाप से सुरक्षा, जन्नत की सफलता और जहन्नम से मुक्ति का सवाल करता हूँ।

اللَّهُمَّ لاَ تَدَعْ لَنَا ذَنْباً إِلاَّ غَفَرْتَه ، وَلاَ عَيْباً إِلاَّ سَتَرْتَه ، وَلاَ هَمّاً إِلاَّ فَرَّجْتَه ، وَلاَ دَيْناً إِلاَّ قَضَيْتَه،

وَلاَحَاجَةً مِنْ حَوَائِجِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ هِيَ لَكَ رِضاً وَلَنَا فِيْهَا صَلاَحٌ إِلاَّ قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

ऐ अल्लाह ! मेरे एक–एक पाप को क्षमा कर दे, एक–एक दोष को छुपा दे, एक–एक चिन्ता को दूर कर दे और प्रत्येक ऋण उतार दे और दुनिया व आख़िरत की वे कुल आवश्यकतायें जो तेरे लिए प्रसन्नता और मेरे लिए सुधार का कारण हैं, उन सब को पूरी कर दे, ऐ सबसे अधिक दया करने वाले।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِكَ ، تَهْدِي بِهَا قَلْبِي ، وَتَجْمَعُ بِهَا أَمْرِي ، وَتَلُمُّ بِهَا شَعْثِي ، وَتَحْفَظُ بِهَا غَائِبِي، وَتَرْفَعُ بِهَا شَاهِدِي ،

وَتُبَيِّضُ بِهَا وَجْهِي وَتُزَكِّي بِهَا عَمَلِي ، وَتُلْهِمُنِي بِهَا رُشْدِي ، وَتَرُدُّ بِهَا الْفِتَنَ عَنِّي ، وَتَعْصِمُنِي بِهَا مِنْ كُلِّ سُوْءٍ.

ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरी उस रहमत (दया) की भीख मांगता हूँ जो मेरे हृदय को शान्ति प्रदान करे, जो मेरे सब मामलों को निपटा दे, जो मेरी चिन्ताओं को समाप्त कर दे, जो मुझ से अदृश्य है उसकी रक्षा करे और जो दृश्य है उनको ऊँचा करे, जो मेरे चेहरे को उज्जवल करे, जो मेरे कर्मों को पवित्र करे, जो मेरे लिए हृदय का मार्गदर्शन करे, जिसके द्वारा तू मुझसे फित्नों को दूर कर दे, और जिसके द्वारा तू मुझे हर बुराई से दूर रखे।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْفَوْزَ يَوْمَ الْقَضَاءِ، وَعَيْشَ السُّعَدَاءِ، وَمَنْزِلَ الشُّهَدَاءِ، وَمُرَافَقَةَ الأَنْبِيَاءِ، وَالنَّصْرَ عَلَى الأَعْدَاءِ.

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे निर्णय के दिन सफलता का सवाली हूँ और अच्छे कर्म करने वालों के जीवन, शहीदों का पद, नबियों का साथ और दुश्मनों के खिलाफ मदद मांगता हूँ।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ صِحَّةً فِي إِيْمَانٍ، وَإِيْمَاناً فِي حُسْنِ خُلُقٍ، وَنَجَاحاً يَتْبَعُه فَلاَحٌ، وَرَحْمَةً مِنْكَ وَعَافِيَةً مِنْكَ وَمَغْفِرَةً مِنْكَ وَرِضْوَاناً.

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे ईमान की तन्दुरूस्ती, ईमान के साथ व्यवहार कुशलता, परम आनन्दमय सफलता और तेरी दया, शान्ति, क्षमा और तेरी प्रसन्नता मांगता हूँ।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الصِّحَّةَ وَالْعِفَّةَ ، وَحُسْنَ الْخُلُقِ ، وَالرِّضَاءَ بِالْقَدَرِ . اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي ، وَ مِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ، إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ.

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे तन्दुरूस्ती, पवित्र आचरण, अच्छे व्यवहार और भाग्य पर सहमत होने का सौभाग्य मांगता हूँ। ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे अपने स्वार्थ की बुराई से और तमाम जानवरों की बुराईयों से जिनकी पेशानी तू पकड़े हुए है, पनाह मांगता हूँ। बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर है।

اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَسْمَعُ كَلَامِي ، وَتَرَى مَكَانِي وَتَعْلَمُ سِرِّي وَعَلَانِيَتِي، وَلَا يَخْفَى عَلَيْكَ شَيْءٌ مِنْ أَمْرِي . وَأَنَا الْبَائِسُ الْفَقِيْرُ، وَالْمُسْتَغِيْثُ

الْمُسْتَجِيْرُ، وَالْوَجِلُ الْمُشْفِقُ وَالْمُقِرُّ الْمُعْتَرِفُ

إِلَـيْكَ بِذَنْـبِهِ ، أَسْـأَلُكَ مَسْـأَلَةَ الْمِسْـكِيْنِ ،

وَأَبْتَهِلُ إِلَيْكَ اِبْتِهَالَ الْمُذْنِبِ الذَّلِيْلِ ، وَأَدْعُوْكَ

دُعَاءَ الْخَائِفِ الضَّرِيْرِ ، دُعَاءَ مَنْ خَضَعَتْ لَكَ

رَقْبَتُهُ ، وَذَلَّ لَكَ جِسْمُهُ ، وَرَغِمَ لَكَ أَنْفُهُ.

ऐ अल्लाह ! तू जानता है कि मैं क्या कहता हूँ, कहाँ रहता हूँ, तू मेरी हर ढकी और खुली बात का जानने वाला है, मेरी कोई बात तुझसे छिपी नहीं है, मैं फटाहाल, दरिद्र तेरी ही सहायता माँगने वाला, तेरी ही पनाह चाहने वाला, डरने वाला, भयभीत होने वाला, अपने पापों को स्वीकार करने वाला, तुझसे मैं अपनी ग़लतियों की क्षमा मांगता हूँ। तुझसे मिसकीनों की तरह भीख मांगता हूँ, एक अक्षम बेहैसियत पापी की तरह आकांक्षी हूँ।

तुझसे एक भयभीत होने वाले और फटेहाल की भाँति दुआ करता हूँ, ऐसे बन्दे की दुआ की तरह जिसकी गर्दन तेरे सामने झुकी हुई हो और जिसका शरीर तेरी बारगाह में गिरा हुआ हो और जिसकी नाक तेरी चौखट पर रगड़ रही हो।

وَصَلَّى اللهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ.

अल्लाह रहमत नाज़िल करे हमारे सरदार मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और आपके परिवार पर और आप के साथियों पर और उन सब पर सलामती भेजे।

دليل الحاج والمعتمر

وزائر مسجد الرسول صلى الله عليه وسلم

تأليف

هيئة التوعية الإسلامية في الحج

اعتماد

اللجنة الدائمة للبحوث العلمية والإفتاء

وسماحة الشيخ محمد بن صالح العثيمين

رحمه الله

ترجمة

أحمد سيد صديقي

اللغة الهندية

وكالة المطبوعات والبحث العلمي

وزارة الشؤون الإسلامية والدعوة والإرشاد

المملكة العربية السعودية

١٤٣٩هـ